



उत्तर कोरिया के परमाणु मुद्दे का समाधान अलग तरीके से होना चाहिए : दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति

सियोल

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ली जे-यूंग ने कहा है कि उन्होंने जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से स्पष्ट रूप से कहा कि उत्तर कोरिया के परमाणु मुद्दे को अन्य अंतरराष्ट्रीय संकटों की तरह नहीं सुलझाया जा सकता। फ्रांस के एवियन-ले-बैंस में आयोजित शिखर सम्मेलन के दौरान दोनों नेताओं के बीच हुई बातचीत में उत्तर कोरिया का परमाणु कार्यक्रम प्रमुख मुद्दा रहा।

दक्षिण कोरिया की समाचार संवाद योनहाप एजेंसी के अनुसार यूरोप की 10 दिवसीय यात्रा के बाद आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में ली ने बताया कि ट्रंप ने अफसोस जताया कि उत्तर कोरिया के परमाणु हथियार

विकसित करने से पहले इस समस्या का समाधान नहीं हो पाया। इसके जवाब में ली ने कहा कि कोरियाई प्रायद्वीप की स्थिति मध्य पूर्व जैसे अन्य क्षेत्रों से अलग है और इसके लिए विशेष रणनीति की आवश्यकता है।

ली ने ट्रंप के सामने चरणबद्ध समाधान का प्रस्ताव रखा, जिसके तहत पहले उत्तर कोरिया में परमाणु सामग्री के उत्पादन को रोका जाए और फिर मौजूदा परमाणु सामग्री को देश से बाहर भेजने जैसे कदम उठाए जाए। उन्होंने कहा कि दीर्घकालिक लक्ष्य पूर्ण परमाणु निरस्त्रीकरण होना चाहिए, लेकिन उससे पहले व्यावहारिक और अल्पकालिक उपायों पर ध्यान देना जरूरी है।

राष्ट्रपति के अनुसार, ट्रंप ने इस प्रस्ताव को एक

संभावित विकल्प बताया और कहा कि वह इस पर विचार करेंगे। ली ने यह भी कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति उत्तर कोरिया के मुद्दे का स्थायी समाधान नहीं निकल पाने को लेकर चिंतित दिखाई दिए।

दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति ने दोहराया कि उनकी सरकार उत्तर कोरिया के साथ टूटे हुए संवाद को फिर से शुरू करने के प्रयास जारी रखेगी, हालांकि दोनों देशों के बीच तनाव लंबे समय तक बने रहने की संभावना है। उन्होंने कहा कि उत्तर कोरिया अपनी सुरक्षा के लिए अमेरिका को महत्वपूर्ण मानता है, इसलिए सियोल अमेरिका और प्योंगयांग के बीच बातचीत को आगे बढ़ाने में सहयोग करेगा।

यात्रा के दौरान ली ने वेटिकन में 14वें पोप लियो से

भी मुलाकात की। उन्होंने पोप को अगले वर्ष दक्षिण कोरिया में आयोजित होने वाले वर्ल्ड यूथ डे कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण दिया और उत्तर कोरिया तथा दोनों कोरिया के बीच स्थित डिमिलिटरीज्ड ज़ोन (डीएमजेड) का दौरा करने का अनुरोध किया।

ली के अनुसार, पोप ने इस प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार करने का आश्वासन दिया। राष्ट्रपति ने कहा कि पोप को दक्षिण कोरिया और कोरियाई प्रायद्वीप में शांति स्थापना के प्रयासों में विशेष रुचि है।

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ने यह भी बताया कि बातचीत के दौरान पोप ने मजाकिया अंदाज में कहा कि वह सैमसंग की घड़ी और मोबाइल फोन तथा हुंडई की कार का उपयोग करते हैं।

न्यूज़ ब्रीफ

अमेरिका ने इज़राइल से लेबनान में सैन्य कार्रवाई न बढ़ाने को कहा
ईरान वार्ता पर फोकस



वाशिंगटन/तेल अवीव। इज़राइली मीडिया की रिपोर्टों के अनुसार, अमेरिका ने इज़राइल पर दबाव डाला है कि वह लेबनान में किसी भी सैन्य बढ़ोतरी से बचे, ताकि स्विटजरलैंड में ईरान के साथ होने वाली महत्वपूर्ण वार्ताएं प्रभावित न हों। तुर्किए की समाचार संवाद समिति अनाडोलू एजेंसी ने इज़राइल के चैनल 13 की एक रिपोर्ट में एक अज्ञात इज़राइली राजनयिक के बयानों से कहा गया है कि वाशिंगटन प्रशासन ने इज़राइल को स्पष्ट संदेश भेजा है कि ऐसी कोई भी सैन्य कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए जिससे ईरान के साथ चल रही कूटनीतिक प्रक्रिया खतरे में पड़ जाए। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका ने यह भी कहा है कि ऐसे हमले, जिनसे ईरान के साथ बातचीत समाप्त हो सकती है, उन्हें अमेरिका के साथ पूर्व समन्वय के बिना अंजाम नहीं दिया जाना चाहिए। इस बीच, इज़राइली सेना को अपने हवाई और जमीनी हमलों में उल्लेखनीय कमी लाने, लेबनान में अपने नियंत्रण वाले क्षेत्रों में सैनिकों को बनाए रखने तथा सैन्य कार्रवाई को केवल तत्काल खतरे की परिस्थितियों तक सीमित रखने के निर्देश दिए गए हैं। हालांकि, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इज़राइली प्रधानमंत्री बेनजामिन नेतन्याहू ने सेना को निर्देश दिया है कि वह आवश्यकता पड़ने तक कब्जे वाले इलाकों में बनी रहे और किसी भी हमले का कड़ा जवाब दे। अउर, स्विटजरलैंड में होने वाली वार्ता में शामिल होने के लिए रवाना होने से पहले अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने प्रकरारों से संक्षिप्त बातचीत की।

बांग्लादेश में भारत विरोधी प्रदर्शनों से बढ़ी चिंता



ढाका। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में भारत विरोधी प्रदर्शनों ने फिर चिंता बढ़ा दी है। जमात-ए-इस्लामी से जुड़े एक नए राजनीतिक मंच और अन्य कट्टरपंथी संगठनों ने भारत के खिलाफ मशाल जुलूस निकाला। प्रदर्शनकारी भारतीय उच्चायोग की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें गुलशन-1 सर्किल पर रोक दिया। इसके बाद उन्होंने वहीं धरना दिया और भारत के केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का पुतला फूंककर अपना विरोध जताया। इस मार्च का आयोजन हाल ही में बनी बांग्लादेश आजाद पार्टी (बीएपी) और अन्य इस्लामी संगठनों ने किया था। प्रदर्शनकारियों का आरोप था कि भारत अवैध प्रवासियों और बांग्लादेशी नागरिकों को सीमा पार धकेलने की कोशिश कर रहा है। शीर्ष भारतीय इंटेलिजेंस सूत्रों के अनुसार, बांग्लादेश आजाद पार्टी का गठन जमात-ए-इस्लामी की एक बड़ी राजनीतिक रणनीति का हिस्सा हो सकता है। भारतीय एजेंसियां मानती हैं कि जमात सीमा विवाद, कथित पुरा-इन और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की कार्रवाई जैसे मुद्दों को उछालकर भारत विरोधी माहौल बनाने की कोशिश कर रहा है। खुफिया इनपुट के मुताबिक, इस मंच में जमात-ए-इस्लामी से जुड़े नेताओं के अलावा कुछ अन्य राजनीतिक चेहरे और सेवानिवृत्त सेना अधिकारी भी शामिल हैं।

रहस्यमयी धूमकेतु 3आई/एटलस हो सकता है 7 अरब साल पुराना



वाशिंगटन। अंतरिक्ष से जुड़ी एक नई खोज ने वैज्ञानिकों और खगोल विज्ञान प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर खींचा। 2025 में खोज गया अंतरतारकीय धूमकेतु 3आई/एटलस अब एक बार फिर चर्चा में है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह धूमकेतु करीब 7 अरब साल पुराना हो सकता है, यानी इसकी उम्र हमारे सूर्य और पृथ्वी के सूर्यमंडल से भी ज्यादा हो सकती है। यदि यह अनुमान सही निकला तो यह अब तक देखा गया सबसे प्राचीन धूमकेतु होगा, जो ब्रह्मांड के शुरुआती दौर की अहम जानकारीयें अपने अंदर समेटे हुए है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस धूमकेतु की खोज 1 जुलाई 2025 को चिली स्थित एटलस सर्वे दूरबीन द्वारा की गई थी। यह हमारे सौरमंडल के बाहर से आने वाली तीसरी ज्ञात अंतरतारकीय वस्तु है। इसकी खोज के बाद हार्वर्ड विश्वविद्यालय के खगोल भौतिक विज्ञानी एबी लोपेज ने दावा किया था कि यह कोई सामान्य धूमकेतु नहीं है। उन्होंने इसकी असामान्य गति और मार्ग का हवाला देते हुए संभावना जताई थी कि यह किसी उन्नत बाह्य-ग्रहीय सभ्यता की तकनीकी संरचना या जांच यान हो सकता है। हालांकि इस दावे को वैज्ञानिक समुदाय के अधिकांश विशेषज्ञों ने संदेह की दृष्टि से देखा।

जापान में विनाशकारी भूकंप ने मचाई थी तबाही 13 मिनट बाद पूरी जमीन खिसक गई

भूकंपीय तरंग पृथ्वी के भीतर करीब 2,900 किलोमीटर की गहराई तक पहुंची फिर लौटी

टोक्यो

2011 में जापान में आया 9.0 तीव्रता का तोहोकू भूकंप आधुनिक इतिहास की सबसे विनाशकारी प्राकृतिक आपदाओं में गिना जाता है। इस भूकंप ने भारी तबाही मचाने के साथ-साथ पृथ्वी के अंदर ऐसी गतिविधि भी पैदा की थी, जिसका रहस्य अब जाकर वैज्ञानिकों ने उजागर किया है। एक नए अध्ययन में दावा किया है कि भूकंप के दौरान उत्पन्न एक शक्तिशाली भूकंपीय तरंग पृथ्वी के भीतर करीब 2,900 किलोमीटर की गहराई तक पहुंची, जहां उसने मेंटल और बाहरी तरल कोर की सीमा से टकराकर वापसी की।

वैज्ञानिकों के मुताबिक इस तरंग के सतह पर लौटने के बाद जापान का बड़ा भूभाग पूर्व दिशा में मुख्य भूकंप के करीब 13 मिनट बाद हुई थी और इसने भू-विज्ञान की कई स्थापित धारणाओं को चुनौती दी है। अध्ययन के मुताबिक भूकंप के दौरान उत्पन्न विशेष प्रकार की भूकंपीय तरंग, जिसे एससीएस वेव कहा जाता है, पृथ्वी के अंदर गहराई तक पहुंची। यह तरंग कोर-मेंटल सीमा से टकराने के बाद वापस सतह की ओर लौटी और कुल मिलाकर करीब 5,800 किलोमीटर की यात्रा पूरी की। यह दूरी पृथ्वी की त्रिज्या के लगभग बराबर मानी जाती है। जब यह तरंग दोबारा जापान पहुंची, तब उसने जमीन में सूक्ष्म लेकिन व्यापक बदलाव पैदा कर दिए।

वैज्ञानिकों को इस घटना के प्रमाण जापान के अत्याधुनिक जीपीएस आधारित भू-अवलोकन नेटवर्क से मिले। देशभर में स्थापित 1200 से ज्यादा उपकरणों ने दर्ज किया कि भूकंप के कुछ मिनट बाद जापान के कई हिस्से अचानक पूर्व दिशा की ओर खिसक गए। भूकंप केंद्र के निकट स्थित क्षेत्रों में जमीन 5.5 मिलीमीटर से ज्यादा खिसकी, जबकि मध्य और पश्चिमी क्षेत्रों में भी 4 मिलीमीटर तक का बदलाव दर्ज किया गया। यहां तक कि केंद्र से करीब 1,300 किलोमीटर दूर स्थित इलाकों में भी 2 से 3 मिलीमीटर तक का विस्थापन देखा गया।



जुड़वा बच्चों की राजधानी के नाम से जाना जाता है इग्बो-ओरा को

अबुजा। नाइजीरिया के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में बसे एक अनोखे शहर इग्बो-ओरा को पूरी दुनिया जुड़वा बच्चों की राजधानी के नाम से जानती है। करीब दो लाख की आबादी वाला यह क्षेत्र प्रकृति की एक अनूठी देन है, जिसे पूरी दुनिया जुड़वा बच्चों की राजधानी (टिवन कैपिटल ऑफ वर्ल्ड) के नाम से जानती है। शहर के केंद्र में एक खरस पथर का स्मारक बना है, जिसमें एक माँ अपने जुड़वा बच्चों को गोद में थामे नजर आती है, जो यहाँ की सामूहिक पहचान का एक खूबसूरत प्रतीक है। जहाँ पूरी दुनिया में जुड़वा बच्चों का जन्म एक दुर्लभ प्राकृतिक घटना मानी जाती है, वहीं इग्बो-ओरा में यह एक सामान्य सामाजिक नियम बन चुका है। एक वैश्विक अध्ययन के अनुसार, जहाँ दुनिया में औसतन हर 1,000 प्रसव में से केवल 12 बच्चे ही जुड़वा पैदा होते हैं, वहीं इग्बो-ओरा की कहानी वैज्ञानिक रूप से बेहद चौंकाने वाली है। यहाँ प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर लगभग 45 से 50 जुड़वा जोड़े पैदा होते हैं। इस अनूठी घटना के पीछे कई सिद्धांत हैं। कुछ चिकित्सा शोधकर्ताओं का मानना है कि इग्बो-ओरा में खाए जाने वाले रताल् (याम) की कंद में फाइटोएस्ट्रोजन नामक एक रासायनिक यौगिक प्रचुर मात्रा में होता है। यह तत्व महिला के शरीर में जाकर अंडाशय को उत्तेजित करता है, जिससे मासिक धर्म चक्र के दौरान एक के बजाय दो या उससे अधिक अंडे रिलीज होने की संभावना बढ़ जाती है। इस प्रक्रिया को चिकित्सा विज्ञान में मरटीपल ओव्यूलेशन कहा जाता है। हालांकि, वैज्ञानिक यह भी जोड़ते हैं कि केवल भोजन ही एकमात्र कारण नहीं हो सकता; सदियों से एक ही क्षेत्र में शादियां होने के कारण यहाँ का जीन पूल भी जुड़वा बच्चों के जन्म के लिए अनुकूल हो चुका है। यहाँ के लोग इसे इब्रेजी संस्कृति और उत्सव से जोड़कर देखते हैं। जुड़वा बच्चों को साक्षात ईश्वर का उपहार तथा सौभाग्य व सूरक्षा लाने वाला माना जाता है। परंपरा के अनुसार, जब भी किसी परिवार में जुड़वा बच्चे पैदा होते हैं, तो खुशी में बीन्स फकाकर पूरे मोहल्ले में प्रसाद या भेंट के रूप में बांटी जाती हैं। इसी अनूठी पहचान का खरस वैश्विक स्तर पर मनाने के लिए साल 2018 से हर साल 11 अक्टूबर को यहाँ वर्ल्ड टिवन्स फेस्टिवल मनाया जाता है, इस दिन दुनियाभर से जुड़वा लोग जुटते हैं। जब बात दुनिया के टिवन कैपिटल की हो रही हो, तो ऐसे में भारत की टिवन कैपिटल का जिक्र करना भी जरूरी हो जाता है। भारत में भी एक जगह है जो जुड़वा लोगों की जन्मदर को लेकर चर्चा में रहती है। यह जगह है केरल के मलपपुरम जिले का कोडिंही गाँव।

ऑस्ट्रेलिया में मिला एच5 बी पलू, दुनिया के सभी महाद्वीप इसकी चपेट में



सिडनी। ऑस्ट्रेलिया में पहली बार एच5 बी पलू वायरस की पुष्टि हुई है। इसके साथ ही यह वायरस अब दुनिया के सभी महाद्वीपों में पहुंच चुका है। ऑस्ट्रेलिया की कृषि मंत्री जूली कालिन्स ने इसकी जानकारी शनिवार को दी। उन्होंने बताया कि पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के एक दूरदराज इलाके में प्रवासी समुद्री पक्षी ब्राउन स्कूआ में एच5 बी पलू पाया गया है। इसकी पुष्टि देश की राष्ट्रीय विज्ञान एजेंसी ने की है। इसके अलावा एक बीमार जायंट पेट्रेल पक्षी के रीपल में संक्रमण की आशंका जताई गई है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इससे पहले ऑस्ट्रेलिया ही दुनिया का एकमात्र महाद्वीप था, जहां एच5 बी पलू स्ट्रेन नहीं मिला था। यह वायरस मुर्गियों और जंगली पक्षियों में तेजी से फैलता है और बड़ी संख्या में उनकी मौत का कारण बन सकता है। मामलों को देखते हुए पशु स्वास्थ्य और कृषि अधिकारियों की आपात बैठक बुलाई। इसमें वायरस के फैलाव को रोकने और राष्ट्रीय स्तर पर जवाबी रणनीति पर चर्चा की गई। रिपोर्ट के मुताबिक ऑस्ट्रेलिया के पीएम एंथनी अल्बनीज ने कहा कि यह चिंता की बात है। सरकार वायरस के फैलाव को रोकने के लिए जरूरी कदम उठाएगी। उन्होंने कहा कि यह संक्रमण प्रवासी पक्षियों के जरिए यहां पहुंचा है। दुनिया के कई देशों में ऐसा हो चुका है और इसी वजह से हम पहले से तैयारी कर रहे थे।

फोटो, लोकप्रियता और ईरान पर टकराए ट्रंप-मेलोनी, बढ़ा राजनीतिक विवाद

अंकारा/रोम

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और इटली की प्रधानमंत्री जिजोर्जिना मेलोनी के बीच जुबानी जंग तेज हो गई है। फ्रांस के एवियन-लेस-बैंस में आयोजित जी-7 शिखर सम्मेलन के बाद दोनों नेताओं ने एक-दूसरे पर सार्वजनिक रूप से तीखे आरोप लगाए हैं, जिससे दोनों देशों के नेताओं के रिश्तों में बढ़ते तनाव की चर्चा शुरू हो गई है। तुर्किए की समाचार संवाद समिति अनाडोलू एजेंसी के अनुसार ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच पर दावा किया कि जी-7 बैठक के दौरान मेलोनी ने उनके साथ कई बार फोटो खिंचवाने की इच्छा जताई थी। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि इटली में मेलोनी की लोकप्रियता घट रही है और वह अपनी छवि सुधारने के लिए उनके साथ नजदीकी दिखाना चाहती हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि इटली ने ईरान के खिलाफ अमेरिकी सैन्य अभियानों में अपने



कूट ठिकानों और हवाई अड्डों के उपयोग की अनुमति नहीं दी थी। ट्रंप ने दावा किया कि अब जब अमेरिका ने ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई

में सफलता हासिल की है, तो मेलोनी फिर से संबंध सुधारने की कोशिश कर रही हैं।

हालांकि, प्रधानमंत्री मेलोनी ने ट्रंप के

यूक्रेन ने बेलारूस को दी चेतावनी- एयर डिफेंस सिस्टम हटाओ या कार्रवाई झेलो

कीव/मिन्स्क

यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेन्स्की ने बेलारूस को चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि वह अपनी दक्षिणी सीमा पर तैनात एयर डिफेंस रडार और संबंधित सैन्य उपकरणों को एक सप्ताह के भीतर नहीं हटाता है, तो यूक्रेन सैन्य कार्रवाई करने पर विचार कर सकता है।

रूस की सरकारी नियंत्रण वाली अंतरराष्ट्रीय समाचार टेलीविजन नेटवर्क रूस ट्यूडे (आरटी) के अनुसार कीव में आयोजित एक प्रेसवार्ता में जेलेन्स्की ने कहा कि बेलारूस को अपने शांतिपूर्ण इरादों को साबित करने के लिए सीमा क्षेत्र से एयर डिफेंस सिस्टम और रिले ट्रांसमीटर हटाने चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसा करने के लिए एक सप्ताह का समय पर्याप्त है और यदि मिन्स्क ऐसा नहीं करता, तो यूक्रेन स्वयं कार्रवाई करेगा।

यह बयान ऐसे समय आया है जब हाल ही में रूस के ब्रियांस्क क्षेत्र में बच्चों की एक फुटबाल टीम को ले जा रही बस पर झेन हमला हुआ था। इस घटना में कई बच्चे घायल हुए थे, जबकि एक महिला की मौत हो गई थी। बेलारूस ने इस हमले



को उकसावे वाली कार्रवाई बताते हुए इसकी निंदा की है। हालांकि, यूक्रेन ने हमले में किसी भी तरह की संलिप्तता से इनकार किया है।

बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको ने हाल ही में कहा था कि उनका देश किसी भी सैन्य संघर्ष में शामिल होने का इच्छुक नहीं है और वह किसी भी पड़ोसी देश के लिए खतरा नहीं है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी थी कि बेलारूस को संघर्ष में घसीटने की कोशिश करने वालों को गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

प्रेसवार्ता के दौरान जेलेन्स्की ने बेलारूस के तेल शोधन उद्योग का भी उल्लेख किया और

संकेत दिया कि रूस के साथ उसके ऊर्जा सहयोग को लेकर बेलारूस का खूदा रूढ़िवादी है। उन्होंने दावा किया कि बेलारूस रूस को पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति करने वाले प्रमुख देशों में शामिल है।

गौरतलब है कि, 2022 में रूस-यूक्रेन संघर्ष शुरू होने के बाद से बेलारूस ने खुदा प्रत्यक्ष सैन्य भागीदारी से दूर रखा है। मिन्स्क लगातार दोनों पक्षों से वार्ता और कूटनीतिक समाधान की अपील करता रहा है। बीते वर्षों में बेलारूस ने कई मानवीय और मध्यस्थता संबंधी पहल भी की हैं, जिनमें यूक्रेनी नागरिकों की रिहाई और संभावित शांति वार्ता की पेशकश शामिल है।

ट्रंप की टिप्पणियों के बाद इटली के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री एंटोनियो तजानी ने भी अपना प्रस्तावित अमेरिका दौरा रद्द कर दिया, जिससे दोनों देशों के बीच बढ़ते राजनीतिक तनाव के संकेत मिले। गौरतलब है कि, कुछ समय पहले तक ट्रंप और मेलोनी को करीबी राजनीतिक सहयोगी माना जाता था। ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित होने वाली मेलोनी एकमात्र प्रमुख यूरोपीय नेता थीं। लेकिन ईरान को लेकर अमेरिकी नीति, सैन्य सहयोग और हाल के सार्वजनिक बयानों ने दोनों नेताओं के रिश्तों में दरार पैदा कर दी है। विश्लेषकों का मानना है कि यह विवाद केवल व्यक्तिगत टिप्पणियों तक सीमित नहीं है, बल्कि अमेरिका और इटली के बीच विदेश नीति तथा सुरक्षा मामलों में उभरते मतभेदों को भी दर्शाता है।

फिलहाल, दोनों पक्षों की ओर से कोई नरमी के संकेत नहीं मिले हैं, जिससे आने वाले दिनों में यह कूटनीतिक तनाव और बढ़ सकता है।